मनुष्य धर्म मूल पूंजीः आचार्यश्री महाश्रमण

केलवा में चातुर्मास, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् का अधिवेशन शुरू, भिक्षु को जानो प्रतियोगिता का आयोजन, आचार्य तुलसी सम्मान समारोह और कवि सम्मेलन आज

केलवाः 5 नवंबर

तेरापंथ धर्म संघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने मनुष्य धर्म को मूल पूंजी बताते हुए कहा कि मनुष्य की गति मिलना व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात है। इसे यूं ही व्यर्थ में गंवाने की बजाय इसका उपयोग सद्कर्म और धर्म में करने से अगली गति का अच्छा निर्धारण हो सकता है। मनुष्य को सदैव नेक और सर्वहित के कार्यों की कार्यान्विति में विश्वास करने का प्रयास करना चाहिए। इससे स्वयं को भी आनंद की अनुभूति हो सकेगी। आचार्यश्री ने उक्त विचार यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास के दौरान शनिवार को देशभर से समागत श्रावक–श्राविकाओं को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि व्यक्ति पापकर्म करता है तो उसकी अगली गति सुखद नहीं रहती। वह मृत्यु के बाद नरक की गति में चला जाता है। हम परिणाम को ध्यान में रखकर कर्म करने का प्रयास करें। गलत कर्म से बुरे परिणाम जीवन में आने की संभावना बनी रहती है। पापों से बचने का प्रयास मनुष्य को करने की आवश्यकता है। धर्मिक आचरण अगले जन्म की गति को सुधारता है। गृहस्थ जीवन में सामान्य त्रुटि होने की संभावना रहती है, लेकिन बडी गल्ती करने से बचना चाहिए। आचार्यश्री ने संबोधि के छठे अध्याय में उल्लेखित अच्छे कर्म को परिभाषित करते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी ने धर्म के पथ पर चलते हुए सम्यक् की प्राप्ति की थी और अमृत के मार्ग पर चलकर मोक्ष को प्राप्त किया। इसलिए मनुष्य को यह मनन करने की आवश्यकता है कि उसे आगे कितने जन्मों में मनुष्य गति की प्राप्ति होगी। इसे प्राप्त करने के लिए वह साधना और स्वाध्याय के प्रति निष्ठावान रहने का प्रयास करें। व्यक्ति इस पर विचार करें कि कुछ समय बाद आत्मा को देहरुपी पिंजरे से छुटकारा मिल जाएगा। इससे निजात से पूर्व वह आध्यात्म की साधना करने का प्रयास करें। मनुष्य यह सोचे कि मैं जिन शासन के जहाज में सवार हूं और यह जहाज उसकी नैया को पार लगा दें। आचार्यश्री भिक्षु की कर्म स्थली केलवा में बैठा हूं। उनकी शरण पाकर अपना जीवन कल्याणमय बनाने का प्रयास करुं।

सबसे बडा है अभय दान

आचार्यश्री ने कहा कि सम्यक् की प्राप्ति करना बहुत बडा कार्य है। इसके लिए हमें वृतियों को त्याग करना होगा। हम अपनी कमजोरियों को छोडें और संयम की दिशा में आगे बढने का प्रयास करें। हमारे जीवन में अभयदान का विकास हो। दसरों को किसी तरह की कठिनाई नहीं आए। इसके लिए प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि चार तरह के दान होते है। अन्न, औषध, ज्ञान और अभय। इनमें से अभयदान को महत्वपूर्ण माना गया है। आचार्य भिक्षु के साहित्य में भी अभयदान का उल्लेख किया गया है। आचार्य कितने ज्ञानी पुरुष थे। उन्होंने आगम का स्वाध्याय किया। हम तो मंथन भी नहीं कर पा रहे है। स्वाध्याय में रहकर अगली गति का निर्धारण करें और आगाम व स्वाध्याय का विकास करने का प्रयास करे। व्यक्ति को छहकाय का प्रण लेने का प्रयास करना चाहिए। वह यह संकल्प लें कि कभी जीवों को नहीं मारुंगा और हिंसा का प्रत्याखान करुंगा। आचार्यश्री ने कहा कि व्यक्ति को अपने मन से आसक्ति को त्यागने की आवश्यकता है। हम अनासक्ति में रहकर अपना जीवन व्यतीत करने का प्रयास करें, तभी मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो सकते है। हमें अनासक्ति की साधना करने की जरुरत है। मोह से जीवन कर्मों से बंध जाता है। मन बंधन का मार्ग है। साधना और उपासना करने से यह मोक्ष का मार्ग भी बन सकता है। विषयों के प्रति आसक्त रहने से व्यक्ति में राग–द्वेष के प्रति बंधन में इजाफा होता है। इनसे मुक्त होने की प्रवृति का जीवन में उतारने की आवश्यकता है। अनासक्ति की साधना करने वाले व्यक्ति का मन मुक्ति का कारण बनता है। मन में

अनासक्ति का भाव सदैव विद्यमान रहें। इसकी आज के भौतिकतावादी परिवेश में महत्ती जरुरत है। सामयिक और नवकार मंत्र से विघ्न बाधाओं में चित्त समाधि मिल सकती है। हम वीतरागता में आगे बढने का प्रयास करे। साधु सदैव इसी का प्रयास करता है। आगे बढने की प्रेरणा और लक्ष्य के साथ मंजिल की तरफ बढना चाहिए। मनुष्य अपनी आत्मा को धोने का प्रयास करें। मौके का खो दिया तो जीवन में बस रोना ही रोना बाकी रह जाएगा। मौत सामने है और पश्चाताप कर रहे है कि जीवन में बहुत कुछ हो सकता था, लेकिन सब कुछ गंवा दिया। मानव जीवन अनेक योनियों में भ्रमण के बाद मिलता है। मंत्री मुनि सुमेरमल ने धर्म भी विचार व्यक्त किए। कांकरोली कन्या मंडल की युवतियों ने अभिनंदन हम करें गीत का संगान किया। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

केलवा में विशाल कवि सम्मेलन आज

कस्बे के समवसरण में रविवार शाम को साढे सात बजे तेरापंथ धर्म संघ के 11 वें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में कवि सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष महेन्द्र कोठारी ने बताया कि इस कवि सम्मेलन में मेरठ के कवि हरिओम पंवार, मुंबई के नरेन्द्र बंजारा, सूरत के गोविंद राठी और मध्यप्रदेश के अलबेला खत्री काव्य पाठ करेंगे।

महाप्रज्ञ अलंकरण समारोह आठ को

यहां तेरापंथ समवसरण में आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 8 नवम्बर को आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति में महाप्रज्ञ अलंकरण समारोह आयोजित किया जाएगा। इसी दिन आचार्य महाप्रज्ञ का स्मृति दिवस भी है। अनेक गोष्ठियां, व्याख्यान होंगे। श्रावक समाज को इसका लाभ मिलेगा। जीवन विज्ञान प्रभारी मुनि किशनलाल ने कहा कि महाप्रज्ञ अलंकरण के उपलक्ष्य में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में इस दिन देश और विदेश के सभी निजी व सरकारी विद्यालयों में रैली निकाली जाएगी। राजसमंद जिले में भी इसी तरह का उपक्रम होगा। उन्होंने बताया कि वाद विवाद, प्रश्नमंच और भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जाएगा। शहरी स्तर पर विद्यालयों में छात्र सम्मेलन और शिक्षक सम्मेलन आयोजित होंगे।